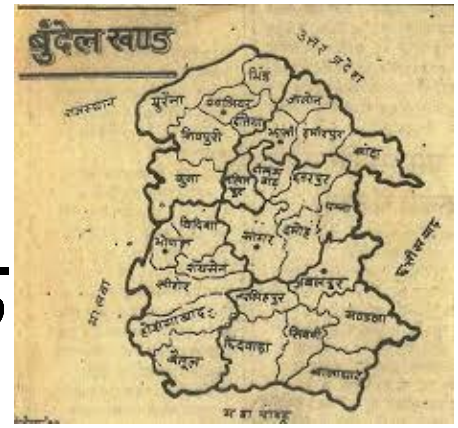
अरविन्द कुमार त्रिपाठी द्वारा पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन





नदी बान्ध
Nadi Bandh Dam

Puratan BANDA, Bundelkhand ka Sankshipt Varnan

Arvind Kumar Tripathi

ISBN : 978-93-5906-820-6

नदी बान्ध / Nadi Bandh Dam

नदी बान्ध / Nadi Bandh Dam

अध्याय शीर्षक	नदी बान्ध
सर्वाधिकार	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
आइ एस बी एन/ **ISBN**	978-93-5906-820-6
प्रकाशक	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक ग्राम – अछरौन्ड, बान्दा – 210 001 उत्तर प्रदेश
मूल्य	निःशुल्क, पुस्तक मित्र को देना
सन्स्करण	प्रथम, 01 अप्रैल 2020
आवरण/मुखपृष्ठ	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
शब्द – संयोजन	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
मुद्रक	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
सन्दर्भ/साभार/सौजन्य	अध्याय **Reference** देखे

Chapter Heading	**Nadi Bandh Dam**
Copyright @	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
ISBN	**978-93-5906-820-6**
Publisher	**Arvind Kumar Tripathi** **Village - Achharaund** **Banda - 210 001** **Uttar Pradesh**
Price	**Free, Circulate to Friends**
Edition	**First, 01 April 2020**
Cover Main	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Word Compositor	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Printer	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Reference/ Gratitude/ courtesy	**Peruse Chapter - REFERENCE**

नदी बान्ध / Nadi Bandh Dam

Nadi Bandh Dam

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

नदी

सतलुज–यमुना जोड़ की बैठक में पन्जाब सरकार ने स्पष्ट किया कि उनके राज्य में सतलुज नदी अभी से सूख रही है। दिल्ली में यमुना हो या फिर गाजियाबाद–शामली में हिन्डन, ये भी सिकुड़ रही हैं। बरसात में तबाही मचाने वाली बिहार के गोपालगन्ज जिले से गुजरने वाली घोघारी, धमई व स्याही नदियों ने भी सूखने के लिए गर्मी का इंतजार नहीं किया। विगत जुलाई में सी–गन्गा यानी सेंटर फॉर गन्गा रिवर बेसिन मैनेजमेण्ट ऐन्ड स्टडीज द्वारा जल शक्ति मन्त्रालय को सौंपी गई रिपोर्ट बताती है कि उत्तर प्रदेश, बिहार, उत्तराखण्ड और झारखण्ड की 65 नदियां बढ़ती गाद से हांफ रही हैं।

हालांकि गाद नदियों के प्रवाह का नैसर्गिक उत्पाद है और देश के कई बड़े तीर्थ व प्राचीन शहर इसी गाद पर विकसित हुए हैं। नदी के साथ बहकर आई गाद को जब किनारों पर माकूल जगह नहीं मिलती, तो वह जलधारा के मार्ग में व्यवधान बन जाती है। गाद नदी के प्रवाह मार्ग में जमती रहती है और इससे नदियां उथली होती हैं। अकेले उत्तर प्रदेश में ऐसी 36 नदियां हैं, जिनकी कोख में इतनी गाद है कि न केवल उनकी गति मन्थर हुई है, बल्कि कुछ ने अपना मार्ग बदला और उनका पाट सन्करा हो गया। रही–सही कसर अन्धाधुन्ध बालू उत्खनन ने पूरी कर दी। नतीजतन इनमें से कई नदियों का अस्तित्व खतरे में है। प्रयागराज के फाफामऊ, दारागन्ज, सन्गम, छतनाग और लीलापुर के पास टापू बनते हैं। सन्गम के आसपास गन्गा नदी में चार मिलीमीटर की दर से हर साल गाद जमा हो रही है।

गन्गा की गहराई कम होने से उसकी धारा में भी परिवर्तन हो रहा है। आने वाले दिनों में गन्गा की धारा और तेजी से परिवर्तित होगी, क्योंकि जब नदी की गहराई कम हो जाएगी, तो नदी का स्वाभाविक बहाव रुक जाएगा। ऐसे में बाढ़ का खतरा स्वाभाविक है। यह बात सरकारी रिकॉर्ड में है कि आज जहां पर सन्गम है, वहां यमुना की गहराई करीब 80 फीट है, लेकिन गन्गा की गहराई इतनी कम है कि सन्गम के किनारे नदी में खड़े होकर कोई भी स्नान कर सकता है। पर यमुना की अधिक गहराई के चलते असन्तुलन उत्पन्न हो रहा है। तभी सन्गम पूरब की तरफ बढ़ रहा है और उसका झुकाव अकबर के किले तक खिसक चुका है, जबकि सन्गम कभी सरस्वती घाट के पास हुआ करता था।

आजादी के बाद भी गढ़मुक्तेश्वर से कोलकाता तक जहाज चला करते थे। गाद के चलते बीते पान्च दशक में वहां गन्गा की धारा आठ किलोमीटर दूर खिसक गई है। बिजनौर के गन्गा बैराज पर गाद की आठ मीटर मोटी परत है। आगरा व मथुरा में यमुना गाद से भर गई है। आजमगढ़ में घाघरा और तमसा के बीच गाद के कारण कई मीटर ऊंचे टापू बन गए हैं। घाघरा, कर्मनाशा, बेसो, मन्गई, चन्द्रप्रभा, गरई, तमसा, वरुणा और असि नदियां गाद से बेहाल हैं।

बिहार में तो उथली हो रही नदियों में गन्गा सहित 29 नदियों का दर्द है। जो नदियां तेज बहाव से आ रही हैं, उनके साथ आए मलबे से भूमि कटाव भी हो रहा है और कई जगह नदी के बीच टापू बन गए हैं। अकेले फरक्का से होकर गन्गा नदी पर हर साल 73.6 करोड़ टन गाद आती है, जिसमें से 32.8 करोड़ टन गाद इस बैराज के प्रति प्रवाह में ठहर जाती है। झारखण्ड के साहिबगंज में गन्गा अपने पारंपरिक घाट से पांच किलोमीटर दूर चली गई है। वर्ष 2016 में केंद्र सरकार द्वारा गठित चितले कमेटी ने साफ कहा था कि नदी में बढ़ती गाद का एकमात्र निराकरण यही है कि नदी के पानी को फैलने का पर्याप्त स्थान मिले, तटबन्ध और नदी के बहाव क्षेत्र में अतिक्रमण न हो और अत्यधिक गाद वाली नदियों के सन्गम क्षेत्र से नियमित गाद निकालने का काम हो पर ये सिफारिशें ठंडे बस्ते में बन्द हो गईं।

यह दुर्भाग्य है कि विकास के नाम पर नदियों के कछार को सर्वाधिक हड़पा गया। भूमि के लालच में कछार और उसकी गाद लुप्त हो गई। गाद हर नदी का स्वाभाविक उत्पाद है, पर उसका भली–भांति प्रबन्धन अनिवार्य है। गाद जैसे ही नदी के बीच जमती है, तो नदी का प्रवाह बदल जाता है। यदि गाद किनारे से बाहर नहीं फैली, तो नदी के मैदान का उपजाऊपन और ऊंचाई, दोनों घटने लग जाते हैं, जिससे बाढ़ का दुष्प्रभाव अधिक होता है।

बान्दा केन नदी इतिहास

जीवन के सन्चार में एक नदियां महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं और यह केवल एक ही जगह पर नहीं बल्कि पूरी पृथ्वी पर लागू है। सभी जीव जंतु जल प्रदान करने वाली नदियां के स्रोत, आने वाले सभी रास्तों पर उनके घर भी हैं और अपने प्यास शांत करने का एक जरिया भी है कुछ ऐसी भी नदियां हैं जो सदियों पुराने या कहा जा सकता है कि लाखों सालों से चलती चली आ रही है। जब तक मानव सभ्यता नहीं थी बहुत अच्छे तरीके से अपना रास्ता बदलते हुए प्राण वायु तथा प्राण भूमि देते हुए आगे बढ़ती रही हैं, लेकिन कथित विकास के नाम पर हमारे उदासीनता

और नदियों के प्रति हमारा गलत सोच इस जीवनदायिनी जन सन्साधन के प्रति गंभीरता को प्रदर्शित करता है और मनुष्य केवल अपने बारे में, अपने लाभ के बारे में सोचता हुआ उनको गंदा करता चला आया है।

जितने भी अर्थशास्त्री हैं उन सब का पहले एक ही विचार होता है कि नदी के किनारे औद्योगिक बसावट की जाए और शुद्ध पानी को लेकर गंदा पानी वापस उसी में छोड़ दिया जाए और जो छोटी नदियां हैं वह इस कारण से एक नाले में और उसके पश्चात जल स्रोत बन्द हो जाने के कारण बन्द व खत्म हो गई। बड़ी नदियां आज भी किसी तरीके से अपने जीवन को झेल रही हैं और मूर्ख मानव उसको लगातार गंदा करता चला जा रहा है।

बड़े शहरों में तो गंदगी ही पैसा कमाने का साधन है। गर्मी के बाद जब बरसात आने वाला होता है तब सफाई के नाम पर लाखों करोड़ों रुपए खर्च किए जाते हैं जो वास्तव में खर्च नहीं होते। बुरी तरह बाढ़ आती है तो जितनी भी शहर की गंदगी है वह सब किसी न किसी तरीके से बहकर नदी में चली जाती है और कार्य करने वाले ऑफिसर बरसात के बाद यह दिखाने में सफल हो जाते हैं– देखिए हमने कितनी सफाई की थी यह स्थिति कमोबेश पूरे भारत में है, विश्व में भी होगा ऐसा मेरा सोचना है।

जनसन्ख्या बढ़ती जा रही है और दोष नदियों का है। पता नहीं क्यों नगण्य से पैसा खर्च करने पर यह जनसन्ख्या कंट्रोल की जा सकती है। इसके अलावा बढ़ती हुई जनसन्ख्या जब रहने के लिए अपनी जगह ढूंढती है तो वह नदी के आसपास ही की जगह होती है ताकि पानी की उपलब्धता बनी रहे, चाहे उसे गंदे से गंदा पानी साफ करके ही क्यों ना पीना पड़े। इसके अलावा जो भी बिल्डिंग बनेंगे वह नदियों के पाट जिसे दूसरे शब्दों में रिवर बेड भी कहते हैं पर अतिक्रमण कर मकान बना लिए जाते हैं। जब बाढ़ आती है तो नदी अपने रिवर बेड अर्थात पाट पर फैलने की कोशिश करती है जो कि अतिक्रमण के कारण सम्भव नहीं होता। वहां सारी चीज डूबने लगती हैं और इसी इसका फायदा जानबूझ कर टैक्स पेयर से वसूल कर लिया जाता है। हमारे मकान बह गए जबकि ऑफिसर कथित इंजीनियर पता नहीं कैसे पास हुए वह इन रिवर बेड पर मकान बनाने की अनुमति दे देते हैं। शायद रिश्वत इसका एक मुख्य पहलू है जिस पर आंख बन्द कर ली जाती हैं।

युद्ध के समय यही रिवर बेड/पाट पर बने हुए मकान, कॉलोनी देश को हराने का काम करते हैं। दुश्मन देश युद्ध के समय अपने इलाके में बने हुए बांधों से पानी छोड़ देता है और एक कृत्रिम बाढ़ का दृश्य पैदा कर देता है। अचम्भित जनसन्ख्या त्राहि त्राहि करती है और सेना का कुछ हिस्सा व साधन उसे आपदा को सम्भालने में व्यस्त हो जाता है और बॉर्डर खाली होने के कारण दुश्मन को लाभ प्रदान करता है। यह सारी व्यवस्थाएं हमारे प्रशासक को क्यों समझ में नहीं आती। अगर यही सिलसिला बना बना रहा तो नदियां जो पानी को सोख कर कुओं में पानी प्रदान करती थी, उनकी यह क्षमता खत्म हो जाएगी। कारण जितना भी कचरा है माइक्रो प्लास्टिक नदियों के धरातल में बैठ जाएंगे और इस तरह का निर्माण कर देंगे कि नदी से जल सोखने की क्षमता खत्म हो जाएगी पानी ऊपर से बहता हुआ निकल जाएगा और जमीन/पृथ्वी में नीचे जाने की क्षमता खत्म होने के कारण जमीन के नीचे का भूगर्भ का पानी लगभग खत्म हो जाएगा और हम नष्ट होने के कगार पर पहुंच जाएंगे।

भगवत् कृपा से यह स्थिति अभी बुन्देलखण्ड में नहीं है। यह सब यहां के पिछड़ेपन और कोई इंडस्ट्री ना होने के कारण है। भगवान सद्बुद्धि दे कि जब भी कोई इंडस्ट्री वालों तो एसटीपी प्लान/सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट को अवश्य क्षमता से अधिक काइबनाकर नदियों को सुरक्षित करें। आप सोचें– जिस समय यमुना दिल्ली में प्रवेश करती है उसी वक्त जो यमुना से खींचकर पानी उपयोग किया जाता है वह मल मूत्र के रास्ते से पुनः यमुना में डाल दिया जाता है और इस तरह से दिल्ली से बाहर निकलने तक न जाने कितनी बार पानी को कथित रूप से शुद्ध करके दिल्ली वालों को पिला दिया जाता है। कहने का मतलब पेशाब करिए प्रक्रिया करिए आप फिर पी लीजिए तो यही प्रक्रिया एक समिति अपने एसटीपी प्लांट में क्यों नहीं कर लेती? क्यों नदियों को गंदा करती हैं?

फिर भी बुन्देलखण्ड में जो निम्न नदियां हैं उन पर ध्यान किया जाए।

बुन्देलखण्ड का प्राचीन नाम दशार्ण अर्थात् दस नदियों का देश है। वे दस नदियाँ क्रमशः निम्न है।

1 केन, 2 धसान, 3 पहूंज, 4 बेतवा, 5 सिन्ध,
6 जमुना, 7 नर्मदा, 8 टौंस, 9 जामनेर 10 चम्बल

नदियों के अतिरिक्त विध्यांचल की पर्वत श्रेणियां भी इस क्षेत्र की ऐतिहासिक गरिमा को बढ़ाती है। विख्यात विध्यांचल पर्वत का वर्णन पौराणिक ग्रन्थों और घटनाओं में आता है।

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

यथा– बुन्देलखण्ड की प्रसिद्ध बेतवा नदी है जिसका पौराणिक नाम वेत्रवती है। वेनत्रवती नदी का वर्णन वाराह पुराण में मिलता है वे वेत्रासुर की माता हैं। कथानुसार सिन्ध द्वीप के राजा ने इंद्र को पराजित करने हेतु घोर तपस्या की, तब वरूण ने प्रगट होकर उन्हें विजय का आशीर्वाद दिया। आशीर्वाद के फलस्वरूप वेत्रवती के पुत्र वेत्नासुर ने इन्द्र को पराजित किया।

नदियों के अतिरिक्त विध्यांचल की पर्वत श्रेणियां भी इस क्षेत्र की ऐतिहासिक गरिमा को बढ़ाती है। विख्यात विध्यांचल पर्वत का वर्णन पौराणिक ग्रन्थों और घटनाओं में आता है।

कात्यायन, कौटिल्य तथा कालीदास आदि विद्वानों ने अपनी कृतियों में 'दशार्ण' शब्द का उल्लेख किया है। अर्थशास्त्र में कौटिल्य ने दशार्ण क्षेत्र में पैदा होने वाले हाथियों को उत्तम कहा है।

दशार्ण त्रवां पराजित

कात्यायन ने 'वार्तिक सिद्धान्त कौमुदी' में वर्णित किया है –

दशार्ण देश नदी च दशार्णा

यहाँ दशार्ण शब्द का अर्थ है 'दस नदियों वाला'। पुराणों में दशार्ण(धसान) नदी के कारण भी दशार्ण नाम उद्धृत किया गया है।

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

जानकारी बुंदेलखंड में बांध और जल निकाय
बुंदेलखंड क्षेत्र की परियोजनाए

च्व्दद . **पन्ना**ए कंउवी . **दमोह**ए ंस्सपजचनत . **ललितपुर**ए ठंदकं . **बांदा**ए

बेपजतांववज . **चित्रकूट** भ्ंउपतचनत . **हमीरपुर**ए ठन्छक्म्स्ज्ञभ ।छक्ए श्रभ ।छैए . **झांसी**

वर्षा मण्डल

0	Project Name		Source River	District	2022	2023	2024	2025
1	Gangao Weir(Chatarpur)	गन्गाउ	Ken	Chhatarpur (M.P)	54	45	100	45
2	Rasin(Chitrakoot)	रसिन			98	37	96	37
3	Gunta Dam	गुन्टा	Gunta Nala	Chitrakoot Dham Karwi	84	67	86	67
4	Arjun Dam(Mahoba)	अर्जुन	Arjun	Mahoba	100	100	98	100
5	Chandrawal Dam(Mahoba)	चन्द्रावल	Chandrawal	Mahoba	100	98	100	98
6	Kabrai Dam(Mahoba)	कबरई	Magaria and Kulharni Nala	Mahoba	100	49	100	100
7	Lachura Weir	लहुरा	Dhasan	Mahoba	100	100	99	100
8	Maudaha Dam	मौदहा	Birma(Tributary of river Betwa)	Hamirpur	98	92	98	100
9	Majhgawan Dam(Mahoba)	मझगवां	Gunchi Nala	Mahoba	32	34	31	98
10	Urmil Dam(Mahoba)	डर्मिल	Urmil	Mahoba	32	27	20	93
11	Keolari Dam	केवलारी	Keolari	Mahoba	44	62	17	98
12	Rangawan Dam(Chatarpur)	रंगावन	Banne	Chhatrapur (M.P)	79	44	34	90
13	Bariyarpur Weir(Panna)	बरियारपुर	Ken	Panna (M.P)	45	37	99	51

नदी बान्ध / Nadi Bandh Dam

14	Ohan Dam(Chitrakoot)	ओहन	Ohan	Chitrakoot Dham Karwi	21	14	40	81
15	Baruwa Dam (Chitrakoot)	बरुआ	Barwa Nala	Chitrakoot Dham Karwi	25	17	26	55
16	bnda hist bandh data							

0	Project Name		Source River	District
1	Gangao Weir(Chatarpur)	गन्गाउ	Ken	Chhatarpur (M.P)
2	Rasin(Chitrakoot)	रसिन		
3	Gunta Dam	गुन्टा	Gunta Nala	Chitrakoot Dham Karwi
4	Arjun Dam(Mahoba)	अर्जुन	Arjun	Mahoba
5	Chandrawal Dam(Mahoba)	चन्द्रावल	Chandrawal	Mahoba
6	Kabrai Dam(Mahoba)	कबरई	Magaria and Kulharni Nala	Mahoba
7	Lachura Weir	लहुरा	Dhasan	Mahoba
8	Maudaha Dam	मौदहा	Birma(Tributary of river Betwa)	Hamirpur
9	Majhgawan Dam(Mahoba)	मझगवां	Gunchi Nala	Mahoba
10	Urmil Dam(Mahoba)	डर्मिल	Urmil	Mahoba
11	Keolari Dam	केवलारी	Keolari	Mahoba
12	Rangawan Dam(Chatarpur)	रंगावन	Banne	Chhatrapur (M.P)
13	Bariyarpur Weir(Panna)	बरियारपुर	Ken	Panna (M.P)
14	Ohan Dam(Chitrakoot)	ओहन	Ohan	Chitrakoot Dham Karwi
15	Baruwa Dam (Chitrakoot)	बरुआ	Barwa Nala	Chitrakoot Dham Karwi
16				
17	Augasi Pump Canal	औगासी पंप नहर	Yamuna	Banda
18	Bhaunrat Dam	भौंराट बांध	Jamini	Lalitpur
19	Govind Sagar Dam	गोविंद सागर बांध	Shahzad	Lalitpur
20	Jamini Dam	जामिनी बांध	Jamini	Lalitpur
21	Khappar Dam	खप्पर बांध	Khappar	Jhansi
22	Lakheri Dam	लाखेरी बांध	Lahheri	Jhansi
23	Matatila Dam	माताटीला	Betwa	Lalitpur

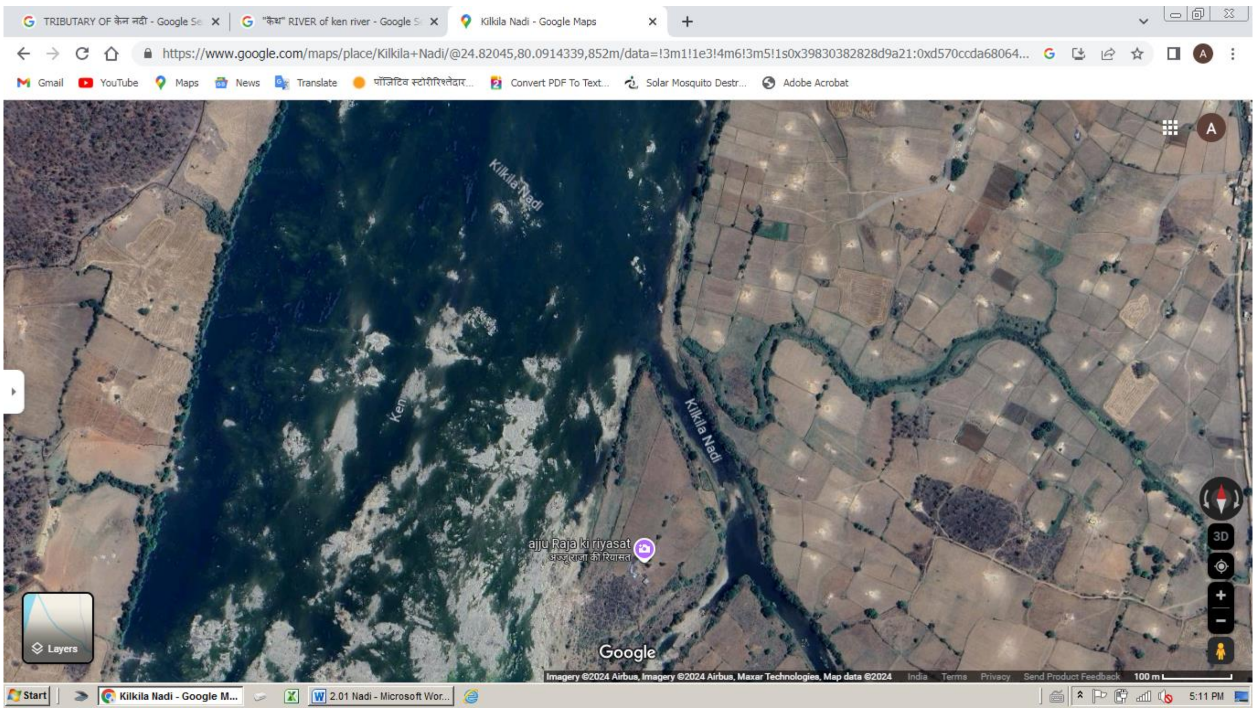
		बांध		
24	**Obra Dam**	ओबरा बांध	**Rihand**	**Sonebhadra**
25	**Pahari Weir**	पहाड़ी वियर	**Dhasan**	**Jhansi**
26	**Pahuj Weir**	पहूज वियर	**Pahuj**	**Jhansi**
27	**Parichha Weir**	पारीछा वियर	**Betwa**	**Jhansi**
28	**Rajghat Dam**	राजघाट बांध	**Betwa**	**Guna (MP) & Lalitpur (UP)**
29	**Rohini Dam**	रोहिणी बांध	**Rohini**	**Lalitpur**
30	**Sajnam Dam**	सजनाम बांध	**Sajnam**	**Lalitpur**
31	**Shahzad Dam**	शहजाद बांध	**Shahzad**	**Lalitpur**
32	**Utari Dam**	उटारी बांध	**Utari**	**Lalitpur**

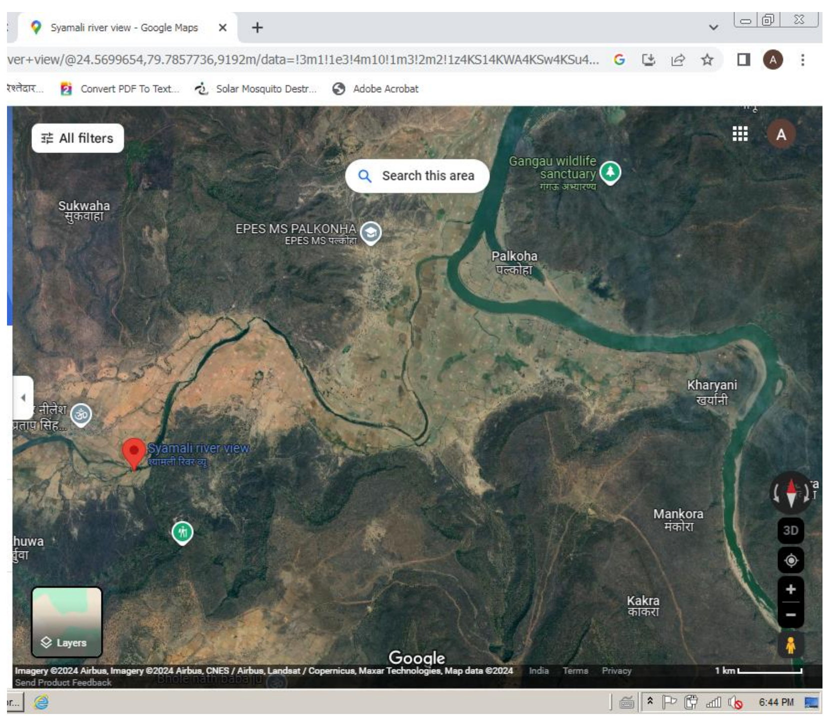
ब्वनतजमेल रू प्ततपहंजपवद क्मचंतजउमदजए न्च

bnda hist bandh data

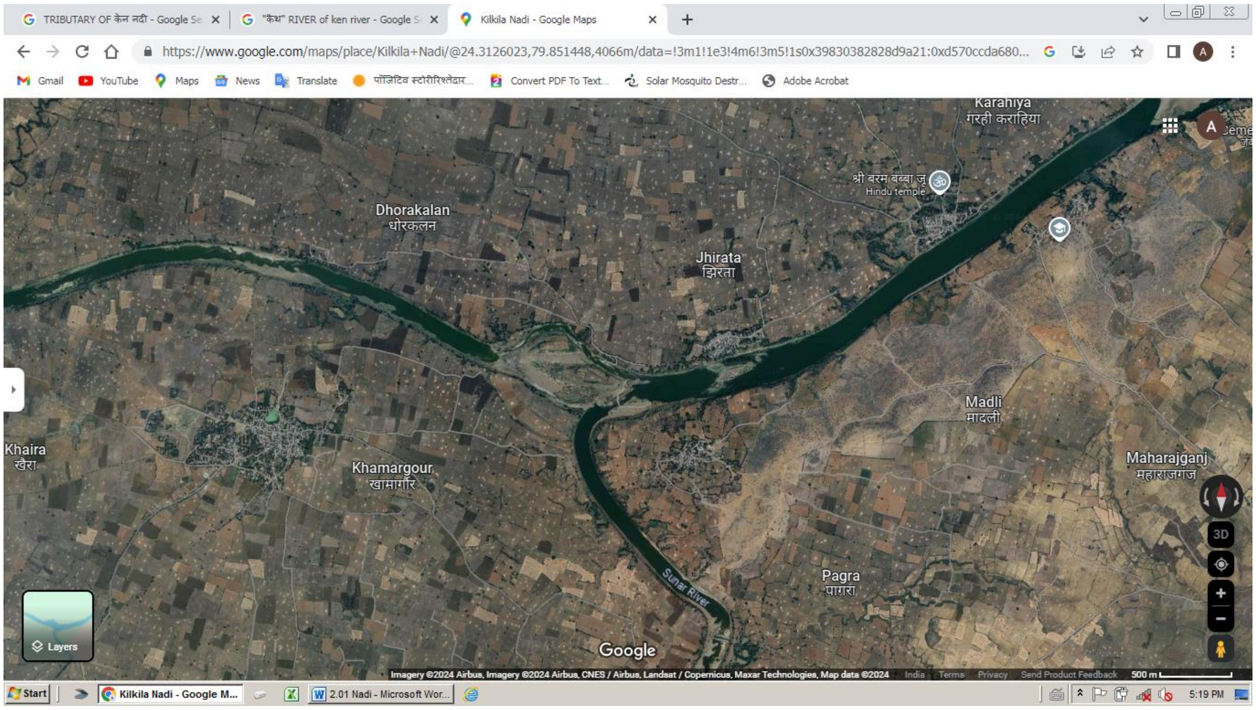
अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

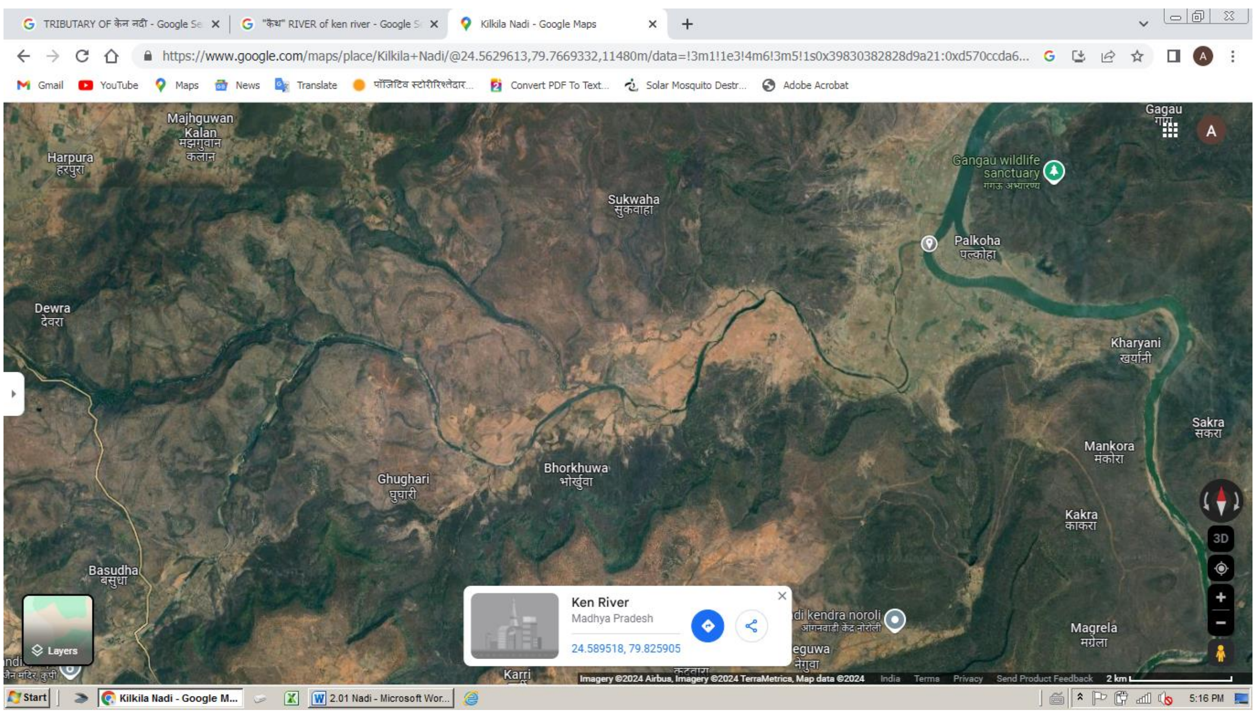




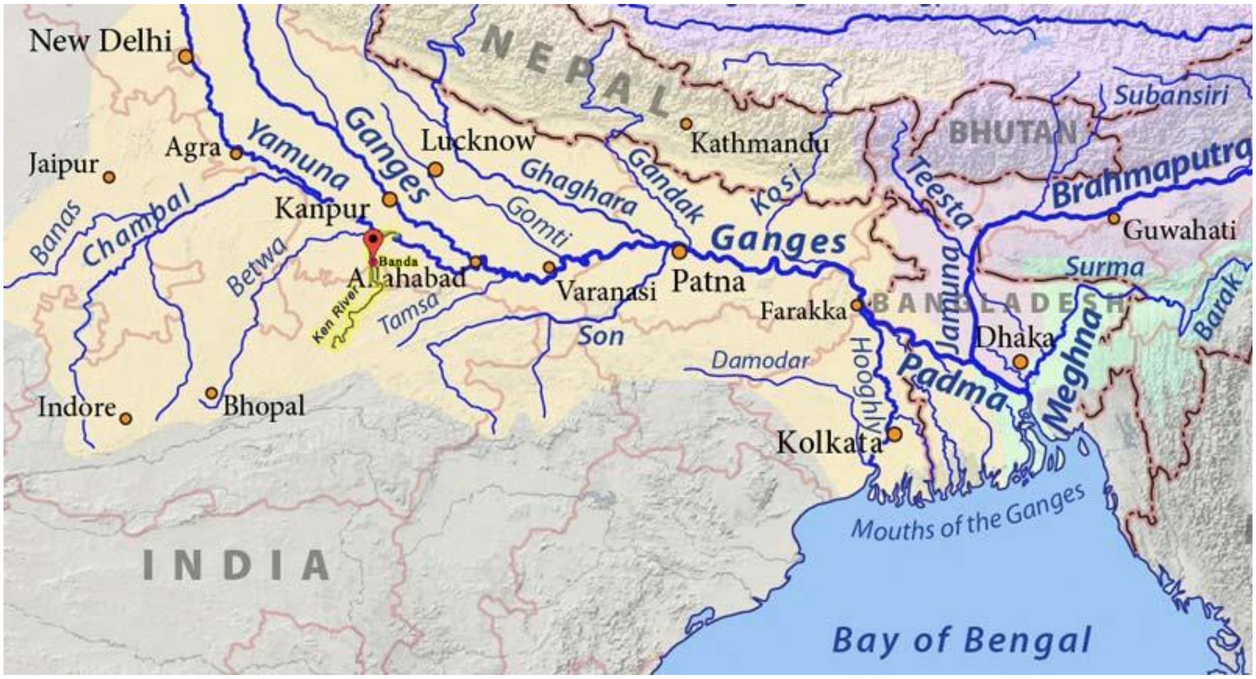


नदी बान्ध / Nadi Bandh Dam


Kilkila Nadi - Google Maps
Karahiya
Dhorakalan
धोरकलन
Jhirata
झिरता
Madli
मादली
Khaira
खैरा
Khamargour
Maharajganj
महाराजगंज
Pagra
पागरा
Sunar River
Google
Layers


Kilkila Nadi - Google Maps
Majhguwan Kalan
Harpura
हरपुरा
Sukwaha
सुकवाहा
Gagau
Gangau wildlife sanctuary
Palkoha
Dewra
देवरा
Kharyani
Sakra
सकरा
Mankora
Ghughari
घुघारी
Bhorkhuwa
Kakra
Basudha
बसुधा
Ken River
Madhya Pradesh
24.589518, 79.825905
Magrela
Karri
Layers

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन



ीजजचेरूध्ध्इनदकमसीींदकण्पदध्जंहध्इंदकं.:म्0: |4: |ब्म्0: |4:ठम्:म्0: |4:82:म्0: |4: |6:म्0: |4:ठम्घ्चंहमत्र16



नदी बान्ध ／ Nadi Bandh Dam



अभिशाप या वरदान:
केन बेतवा गठजोड़



केन-बेतवा गठजोड़ परियोजना का मानचित्र

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

जिले की नदियाँ यमुना प्रणाली से सन्बन्धित हैं और इसमें केन, बाघेन, पैसुनी और उनकी कई सहायक नदियाँ शामिल हैं। सभी धाराओं का मार्ग दक्षिण से उत्तर की ओर है, बाघेन के अपवाद के साथ जो दक्षिण–पश्चिम से उत्तर–पूर्व तक जिले में तिरछी बहती है। उन्होंने देश को अच्छी तरह से चिह्नित वर्गों में काट दिया है और उनके बीच मध्यवर्ती वाटरशेड अच्छी तरह से परिभाषित हैं, खासकर ट्रान्स–बाघेन पथ में। उस धारा प्रवाह के उत्तर–पश्चिम में, ये स्तर परिवर्तन अचानक नहीं होते या कम होते है। लेकिन गरारा, उसराहा और अन्य नालों का यहां वही प्रभाव पड़ा है जो बरुआ, करेहली, बाणगन्गा और कई अन्य धाराओं का हुआ है। कुछ बड़ी सहायक नदियां बारहमासी हैं, लेकिन छोटी नदियां केवल अचानक किनारों के साथ गहरे चैनल वाली धारा बनाती हैं, जो बाढ़ के पानी के बल से बाहर निकल जाती हैं, जो ठंड के मौसम के बाद जल्दी से कम हो जाती हैं और पूरी तरह से सूख जाती हैं। यह विवरण सन्शोधित रूप में बड़ी धाराओं जैसे कि बाघेन और पैसुनी पर भी लागू होता है। वर्ष में आठ महीने वे क्षीण चैनलों में चलते हैं, जो ज्यादातर जगहों पर गम्य होते हैं, लेकिन कभी–कभी वे भारी बारिश से इतने उफनती हैं कि नावों की मदद को छोड़कर अगम्य हो जाते हैं।

यमुना– तहसील बान्दा में ग्राम नारा–यार में जिले को छूती है, इससे पहले कि यह जिले की उत्तरी सीमा के साथ बढ़ी हुई मात्रा के साथ बहती है, तहसील बान्दा, बबेरू और मऊ को फतेहपुर और इलाहाबाद जिलों से अलग करती है। नदी की सामान्य प्रवृत्ति सम्भवतः कई सदियों से इसके दक्षिणी तट को काटने की रही है और कई गाँव इसकी विनाशकारी कार्रवाई से पीड़ित हैं। इस प्रकार चिल्लाघाट के पास शादीपुर/शैपुर/सादीपुर, मुगल काल में परगना पैलानी का मुख्यालय पूरी तरह से डूब/कट गया था। फिर से तहसील मऊ के परदवान में, समय–समय पर एक प्राचीन शहर के खंडहरों का खुलासा करने के लिए जाना जाता है। दाहिने किनारे के नीचे बहने के बाद नारा यार और बुढेरा में यह उत्तर की ओर मुड़ना शुरू कर देता है। इस बिन्दु पर इसकी दिशा मोड़ के पीछे अपना बल वहन करती है, जिसके डुबकी में चन्दवारा की प्रसिद्ध जलोढ़ भूमि स्थित है। सोबड़ा और महाबारा में यह अचानक दक्षिण की ओर मुड़ जाता है, जिससे रेत के बड़े हिस्से निकल जाते हैं और फिर पिप्रो–दार(पपरैन्दा) में पूर्व की ओर बहता है, फिर से चिल्ला तक दाहिने किनारे के नीचे हो जाता है। इस बिन्दु पर यह उत्तर की ओर एक कोणीय वक्र बनाता है, फिर से साडी मदनपुर के चारों ओर दक्षिण की ओर मुड़ता है और लौमर में अच्छी जलोढ़ मिट्टी छोड़ता है। जौहरपुर से यह फिर से दाहिने किनारे के नीचे बहती है, और दक्षिण–पूर्व में तहसील बबेरू में मार्का तक एक सीधी दिशा में जारी रहती है, जहां एक और कुछ हद तक अचानक वक्र में यह काफी मात्रा में उदासीन जलोढ़ मिट्टी के चारों ओर रेत के बड़े हिस्सों को जमा करती है। यह उसी तहसील में चरका में फिर से दक्षिण की ओर मुड़ जाती है, लेकिन डान्डो में भूमि की प्रक्षेपित जीभ के चारों ओर कुछ किलोमीटर आगे फिर से उत्तर की ओर विक्षेपित हो जाती है। इस बिन्दु से इसका मार्ग अधिक स्पष्ट रूप से दक्षिण पूर्व में है, एकमात्र महत्वपूर्ण लूप सुरवाल में है। नदी बघेन के मुहाने के पास बीरा में और फिर से पैसुनी पर, तहसील कर्वी में, और तहसील मऊ में ऐ तारी और मऊ खास में अच्छी जलोढ़ मिट्टी बनाती है। यह लगभग 215 किमी की दूरी तय करने के बाद अंततः बेनीपुर पाली गांव में जिले को छोड़ देता है। तट आम तौर पर गहरी खड्डों से घिरा होता है, लेकिन दूसरी ओर कई बिन्दुओं पर यह धीरे–धीरे धारा की ओर ढलान करता है, और कुछ स्थानों पर, जैसे कि गरोला, सोबादा, लासनरा, मार्का और चौका, भूमि की निचली ढलान पर स्थित गाँव हैं जो एक बार नदी द्वारा जलमग्न होने का आभास देते हैं। इसकी चौड़ाई और वेग मौसम के अनुसार बदलता रहता है। बारिश के दौरान यह चम्बल, बेतवा या लाइट केन से इसमें डाले जाने वाले पानी की मात्रा के अनुसार काफी और कभी–कभी विशाल आयामों तक बढ़ जाता है।
(जलोढ़ भूमि alluvium soil, Alluvial land, Alluvial soil)

केन–

स्त्रोतः अहिरगवां स्थान कैमूर रेंज, जबलपुर जिला, मध्य प्रदेश के उत्तर–पश्चिम ढलानों पर अहिरगवां गांव के पास से निकलती है और उत्तर प्रदेश में फतेहपुर के पास चिल्ला गांव में यमुना के साथ मिलने से पहले 427 किमी की दूरी तय करती है।

ऊंचाई 550मीटर

मुहाना यमुना नदी स्थान चिल्ला, फतेहपुर जिला, उत्तर प्रदेश चिल्ला के निकट

निर्देशांक 25°46′उ 80°31′पूर्व निर्देशांक

केन नदी की प्रमुख सहायक नदियाँः

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

केन का कुल जल निकासी बेसिन 28028 किमी है, जिसमें से 12620 किमी सोनार नदी का है जो इसकी सबसे बड़ी सहायक नदी है, जिसका पूरा बेसिन मध्य प्रदेश में स्थित है; और इसके 427 किलोमीटर(265मील) के मार्ग में इसे अपनी सहायक नदियों जैसे बावस, देवर, कैथ और बैंक से बाएं किनारे पर और कोपरा और बेरमा से पानी मिलता है।

सहायक नदियाँ   बावस, देवर, कैथ, बैंक, कोपरा, बेयरमा, सोनार, वीरमा, बाना, पाटर सोनार, वीरमा, बाना, पाटर शियाम, केल, बिछवाहिया या बिचुई और गवाइन आदि केन नदी की सहायक नदियाँ हैं।

बावस नदी, केन नदी की सहायक नदी है. केन नदी के 427 किलोमीटर के मार्ग में बावस नदी बाएं किनारे पर बहती है. केन नदी के जल निकासी बेसिन में बावस नदी के अलावा देवर, कैथ, और बैंक भी सहायक नदियां हैं।

केन नदी के बारे में कुछ और जानकारीः

केन नदी का कुल जल निकासी बेसिन 28058 किलोमीटर है।
केन नदी की सबसे बड़ी सहायक नदी सोनार नदी है।
केन नदी में कोपरा और बेरमा नदियों से भी पानी मिलता है।

केन नदी जिसे कायन के नाम से भी जाना जाता है, जिले की सबसे बड़ी नदी यमुना के बगल में है। मध्य प्रदेश के दमोह जिले में बढ़ते हुए, यह पहले तहसील नरैनी के बिलहरका गाँव में लगभग दो किलोमीटर तक जिले को छूती है और फिर जिले को छोड़ देती है। इसका मार्ग सामान्यतः उत्तर–पूर्व है। यह उसी तहसील में फिर से प्रकट होती है और तहसील नरैनी को मध्य प्रदेश से अलग करता है जब तक कि यह तहसील बान्दा में उतरंडी गांव के पास जिले में प्रवेश नहीं करता है। यह तहसील बान्दा से होकर बान्दा शहर से होकर गुजरती है और जिला हमीरपुर के तहसील मौदहा के साथ जिले की सीमा बनाती है। इसके बाद यह तहसील बान्दा से होकर गुजरता है, जो लगभग पूर्व की ओर पैलानी खास में एक कोर्स करता है। यह चिल्ला तारा में यमुना में मिलती है। अपने ऊपरी क्रम में यह एक चट्टानी सतह पर टूटे हुए पहाड़ी देश से होकर बहती है; और अजयगढ़ क्षेत्र के कोरई गांव में लगभग 85 मीटर की सरासर गिरावट के साथ ठोस क्रिस्टलीय चट्टान से अपने स्वयं के पानी की प्रक्रिया द्वारा खुदी हुई एक खाई में गिरता है। बारिश में नदी की उफनती धारा से इस बिन्दु पर बने झरने एक शानदार दर्शनीय स्थल प्रस्तुत करते हैं। सन्कीर्ण कण्ठ टाइल नदी को छोड़कर आम तौर पर मोटे भूरे रंग की रेत के बिस्तर में जारी रहती है, जो विभिन्न रंगों के गाद और कंकड़ के साथ मिश्रित होती है, और कुछ स्थानों पर, जैसे बान्दा, गौरशेओपुर और खरौनी, जाल और ग्रेनाइट चट्टानों के माध्यम से अपना रास्ता काटती है। कुल मिलाकर यह एक गहरी और अच्छी तरह से परिभाषित चौनल में बहती है, जो बाढ़ के पानी की कार्रवाई से बाहर निकलती है जो कभी–कभी भारी मात्रा में नीचे आती है। दाहिना किनारा आम तौर पर ऊंचा और खड़ी होता है, असन्ख्य खड्डों से घिरा होता है, लेकिन बायां किनारा कुछ अधिक धीरे से ढलान करता है, और एक निश्चित मात्रा में फ्लुवियल कार्रवाई के अधीन होता है। हालाँकि, धारा द्वारा निर्मित जलोढ़ भूमि, इसकी उच्च पहुंच में, महत्वपूर्ण नहीं है, लेकिन तहसील बान्दा के उत्तरी भाग में, स्थानों पर, काफी जलोढ़ पथ हैं। पैलानी से यमुना के साथ इसके जंक्शन तक, केन बड़ी नदी की धारा से बहुत प्रभावित होता है, बहिर्वाह कभी–कभी पूरी तरह से अवरुद्ध हो जाता है; यह पानी के उदय का कारण बनता है जो उस हाइलैंड को भी ओवरफ्लो करता है जिस पर लासनरा स्थित है। इस घटना को स्थानीय रूप से बीएमए के रूप में जाना जाता है और इसके द्वारा प्राप्त गाद के समृद्ध भंडार बहुत मूल्यवान हैं। नदी की सबसे जिज्ञासु विशेषताओं में से एक एक पुराना बिस्तर है, जिसे तुरी कहा जाता है, जो पैलानी खास के सामने है। यह इस बिन्दु से पश्चिम में जसपुरा गाँव की ओर बहती है, पूर्व की ओर अचानक मुड़ती है, और झंजारी, डंडामऊ और मरझा के गाँवों के पीछे बहती हुई वर्तमान धारा में लगभग एक किलोमीटर नीचे सिन्धन कलां के गाँव स्थल के नीचे मिलती है। परंपरा यह है कि एक डाकू प्रमुख, जिसे हुमाउन कहा जाता है, जिसके किले के अवशेष अभी भी झंजारी की भूमि में इंगित किए गए हैं, ने पैलानी के तहत नदी को अवरुद्ध कर दिया, ताकि उसके किले की दीवारों के नीचे इसके पानी को मोड़ दिया जा सके। एक फकीर ने डाकू और उसके काम को शाप दिया, और नदी उठी और अपमानजनक बाधा को बहा ले गई। हालांकि, इसमें कोई सन्देह नहीं है कि वर्तमान सतह एक काफी हालिया गठन है, नदी पैलानी के नीचे बहुत उथली है, रेत की एक अलग पट्टी के साथ, जो निस्सन्देह पुराने उच्च बैंक के अवशेष हैं, जिसके माध्यम से नदी ने अपना रास्ता काट दिया है। तुरी में सामान्य वर्षा के मौसम में बाढ़ आ जाती है और लगभग 800 हेक्टेयर की बेजोड़ उर्वरता का एक खण्ड बनता है।

कहा जाता है कि केन का नाम कन्या से लिया गया है, जो एक युवती के लिए हिन्दी शब्द है। कहानी यह है कि एक अहीर युवती ने एक कुर्मी लड़के के लिए जुनून का मनोरन्जन किया। युवती के पिता ने उन पर अनैतिकता का सन्देह करते हुए, कुर्मी लड़के की हत्या कर दी और उसकी लाश को एक तटबन्ध के नीचे दफना दिया। युवती ने अपने पिता के कार्य के बारे में सुनकर, भावुक होकर अपनी बेगुनाही पर जोर दिया और स्वर्ग से प्रार्थना की कि वह उसे अपने प्रेमी का शरीर दिखाए। उसकी प्रार्थना के जवाब में नदी उठ गई, तटबन्ध ने उसका, कुर्मी की लाश का

खुलासा किया, और साथ ही नौकरानी को भी घेर लिया इसके बाद नदी को कन्या नदी कहा जाता था जो कायन या केन हो गई थी।

चन्द्रावल– केन की सबसे बड़ी धारा हमीरपुर जिले में चन्दनवा नामक झील के पास से निकलती है और तहसील बान्दा के ट्रांस–केन हिस्से के पश्चिम से होकर बहती है। यह पैलानी खास के करीब केन में शामिल हो जाता है। आमतौर पर यह एक बारहमासी धारा है और अन्यथा उबड़–खाबड़ और प्यासे इलाके में पानी की आपूर्ति के लिए महत्वपूर्ण है, और क्योंकि यह कभी–कभी उच्च और टूटे हुए ऊपरी इलाकों के बीच अलग–अलग चौड़ाई की घाटी में बाढ़ लाती है जिसके माध्यम से यह बहती है।

केन की अन्य सहायक नदियाँ शियाम, केल, बिछवाहिया या बिचुई और गवाइन हैं, जिनमें बड़ी सन्ख्या में छोटे जल निकासी चैनल हैं, जिनमें केवल बरसात के मौसम में एक सतत धारा होती है।

बाघेन– बारहमासी नदियों के बीच कींट के महत्व में अगला, बाघेन है। यह जिला पन्ना में कोहारी के पास एक पहाड़ी से निकलती है और इस जिले में तहसील नरैनी के मसौनी भरतपुर गांव में प्रवेश करती है। तहसील नरैनी के माध्यम से उत्तर–पूर्व की ओर बढते हुए यह एक ऐसे बिन्दु तक पहुँचती है जहाँ तहसील नारायणी, बबेरू और कर्वी की सीमाएँ मिलती हैं। उसी दिशा में जारी रखते हुए यह तहसील बबेरू को तहसील कर्वी से अलग करती है जब तक कि यह तहसील कर्वी के बिलास गांव में यमुना में शामिल नहीं हो जाती। किनारे आम तौर पर शान्त रहे हैं, लेकिन स्थानों में अचानक, और आमतौर पर नदी ज्यादातर स्थानों पर फोर्डेबल है। बरसात के मौसम में, हालांकि, यह बड़ी मात्रा में पानी लाता है, जो जल्दी से कम हो जाता है। यह तुलनात्मक रूप से कम जलोढ़ मिट्टी बनाता है, और अक्सर रेत या कंकर शिंगल की मात्रा जमा करता है, जो इसकी कार्रवाई में सबसे अधिक मुखर है, लेकिन यमुना के साथ इसके जंक्शन के पास है

यमुना धारा इसके आउटलेट को अवरुद्ध करने के लिए पर्याप्त है, तो यह निचली भूमि के एक बड़े क्षेत्र में बाढ़ के लिए उत्तरदायी है, गुरहा कलां, बदौसा और दरसेंडा इसके तट पर महत्व के प्रमुख गाँव हैं, जबकि कालिंजर इससे लगभग 2 किमी दूर है।

बाघेन की मुख्य सहायक नदी, रंज, तहसील नरैनी में गुरहा कलां में मिलती है, लेकिन आगे पूर्व में दक्षिण से बहने वाली कई छोटी सहायक नदियाँ हैं। ये क्रम में हैं, मदरार, बरार, करेहली, बाणगन्गा और बरुआ हैं, जिनमें से प्रत्येक की अपनी सहायक नदियाँ हैं। इनमें से केवल दो महत्वपूर्ण हैं। बाणगन्गा तहसील कर्वी के कोल्हुआ मुआफी गांव में एक छोटे से झरने से निकलती है। यह उस बिन्दु पर झरना माना जाता है जहां राम द्वारा मारा गया एक तीर गिर गया था, और बदौसा के विपरीत बाघेन में शामिल होने के कारण उत्तर की ओर बहता है। करेहली गोधरामपुर में निकलती है और अरी के ऊपर शक्रोकुंड पूल से टपकता है के पानी से मिल जाता है। यह बाणगन्गा के समानांतर एक पाठ्यक्रम का अनुसरण करता है, जो कुर्हुनबागेमऊ में इसके 180 मीटर के भीतर पहुंचता है और उत्तर की ओर तब तक जारी रहता है जब तक कि यह बदौसा से लगभग 3 किमी ऊपर बाघेन में शामिल नहीं हो जाता।

पैसुनी– यमुना की सहायक नदियों में से एक यह धारा मध्य प्रदेश की पहाड़ियों से निकलती है और इतवान डुंडाईला गांव के पास इस जिले को छूती है और उत्तर की ओर बहती है और इस जिले को मध्य प्रदेश राज्य से लगभग 25 किमी तक अलग करती है। मंगवान गाँव में यह विंध्य पठार से दो महीन झरनों में गिरता है, जो लगभग 50 मीटर लंबे एक गहरे कुंड से अलग होता है। निचला कुंड जो हमेशा साफ, पारभासी पानी से भरा होता है, कहा जाता है कि वह इतनी गहराई का होता है कि इसे गिराना लगभग असम्भव होता है। स्थानीय किंवदंती के अनुसार, राक्षस, भारद, जिसे राम द्वारा नरक में फेंक दिया गया था, ने अपने पतन के बल से गुहा का गठन किया। यही किंवदंती टिकरिया गांव में नदी से डेढ़ किलोमीटर की दूरी पर चट्टान में एक और उल्लेखनीय गुहा के बारे में भी सम्बन्धित है।

जमनहाई को भरत–कुंड कहा जाता है। पानी ने चट्टान में कुछ उल्लेखनीय गड्ढों की खुदाई की है, लेकिन झरने केवल बारिश के कारण शानदार हैं। इस बिन्दु से धारा एक गहरी खाई में कुछ दूरी के लिए बहती है, दोनों तरफ बलुआ पत्थर के ढलान से घिरी हुई है और फिर अंसुइया की पहाड़ी तक अधिक खुले चट्टानी बिस्तर में जारी है। अनसुइया में यह सबसे पहले पहाड़ियों को छोड़ता है और इसके किनारे के पास अन्सुइया देवी को समर्पित एक छोटा मंदिर है। स्फटिकशिला एक चौकोर बलुआ पत्थर का द्रव्यमान है जो पानी में आधा विलीन हो गया है, जो राम के रूप में प्रतिष्ठित एक विशाल पदचिह्न की छाप रखता है, जिसने पड़ोस में अपने चौदह साल के निर्वासन का हिस्सा बिताया था। नदी के नीचे लगभग3 किमी नीचे चित्रकूट के करीब सीतापुर मुआफी में जिले में फिर से प्रवेश करती है

और तहसील कर्वी के माध्यम से बाघेन के समानांतर एक पाठ्यक्रम में जारी रहती है, पाटिया ज़ब्ती और काहेता मुआफी के बीच उस नदी के 3 किमी के भीतर पहुंचती है और कंकाटा गांव में यमुनिट में मिलती है।

यमुना के साथ अपने जंक्शन के पास निचली भूमि के बीच कुछ उल्लेखनीय मोड़, मुख्यतः भदेडू गांव मे यह बनता हैं, जहां अक्सर बाढ़ आती है। इसके किनारे आमतौर पर खड़ी होती हैं और उसकी विशेषताएं बाघेन की तरह होती हैं। कहा जाता है कि नदी का नाम पाई(दूध) श्राविनी(बहने या गिरने) से लिया गया है, और इसे पैयस्वनी या पैसवानी के नाम से भी जाना जाता है। स्थानीय लोग मंदाकिनी नाम को आम तौर पर पैसुनी कहते हैं, और बाद का नाम एक गहरे चौड़े नाले को देते हैं जो दक्षिण में सेमरिया जगन्नाथ बासी से बहता है और सीतापुर में एक स्थान पर पैसुनी में शामिल हो जाता है। नाले का असली नाम कुठार है और यह अपने बाएं किनारे पर पैसुनी का एकमात्र हिस्सा है। दाहिने किनारे पर नदी सरभंग, करीबरार और हीरा कोटरा से मिलती है, लेकिन चान से मिलने पर लगभग 48 किमी की दूरी के लिए इस तरफ भी इसकी कोई अन्य मुख्य सहायक नदी नहीं है।

चान— यह धारा उचित पाठा के नीचे की ऊपरी भूमि में निकलती है, जिस पर रुकमा और दादरी गाँव स्थित हैं, जिसे कभी—कभी दादरी—का पाठा कहा जाता है, जो कर्वी के दक्षिण में स्थित है। यह उथली सतह में बहती है, पत्थरों के साथ बिखरी हुई है, जहां तक सेमरदाहा गांव है और तहसील कर्वी में सगवाड़ा में पैसुनी के साथ अपने जंक्शन के लिए सामान्य खड्डों के साथ खड़ी बैंकों के बीच जारी रहती है। चान एक बारहमासी धारा है, हालांकि गर्म मौसम में इसकी ऊपरी पहुंच में कुछ अलग—थलग पूल होते हैं, और यहां तक कि इसके निचले धारा में, यह कम अनुपात में सिकुड़ जाता है। यह अपनी बारी में कई सहायक नदियों को प्राप्त करता है, जिनमें से सबसे महत्वपूर्ण गिरवर है।

बरदाहा— यह धारा तहसील कर्वी के दक्षिण—पूर्व कोने में रीवा के ऊंचे इलाकों से बहती है, और इस जिले में एक छोटे से हिस्से के बाद पूर्व की ओर फिर से जिला रीवा में प्रवेश करती है। यह मुख्य रूप से निही गांव के ऊपर बेधक में और कल्याणपुर के ऊपर अबरकान और धार कुंड में झरने के लिए ध्यान देने योग्य है।

जब बारिश के कारण धारा उफान पर होती है, ये सुरम्य और अच्छी तरह से देखने योग्य है। पैसुनी के ऊपरी भाग और इसके गहरे ताल को छोड़कर यह पथ की एकमात्र नदी है, जो गर्म मौसम में उस पथ की मुख्य पेयजल आपूर्ति का गठन करती है।

गरारा— किसी भी महत्व की अंतिम धारा गरारा है। एक शाखा जमरेही गाँव के पास और दूसरी अधरौती गाँव के पास से निकलती है, दोनों तहसील नरैनी में। वे तहसील बबेरू में मुरवल में एकजुट हो जाते हैं और सन्युक्त धारा उत्तर की ओर बहती है, तहसील बबेरू के जलालपुर गांव में यमुना में मिलती है। यह बारहमासी है और उथले रैपिड्स के साथ बारी—बारी से गहरे पूल होते हैं। यमुना के साथ अपने जंक्शन के पास यह कुछ निष्पक्ष, लेकिन व्यापक नहीं, जलोढ़ मिट्टी बनाता है। बैंक आमतौर पर उच्च और अचानक होते हैं। यह दो महत्वपूर्ण सहायक नदियों से जुड़ी हुई है, पूर्व में मटियारा और पश्चिम में उसराहा। पहले तहसील बबेरू के एक हिस्से में बहती है और बाद में तहसील बान्दा का एक बड़ा हिस्सा है।

इन बड़ी धाराओं के अलावा इसकी सहायक नदी गंटा अपनी सहायक नदी जिवंती, सतेठा, खुरसाहा के साथ औंझा, बन्गावा और बरेरी विमी सहायक नदी हगिनी है। सभी लहिल मऊ में हैं; और इन बड़ी धाराओं में से एक या अन्य में शामिल होने वाले बड़ी सन्ख्या में महत्वहीन नाले, जिन्होंने सभी तरफ से जिले के चेहरे को खराब कर दिया है।

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

झील

झील – जिले में कोई झील या लेक मौजूद नहीं है। फिर भी, कुछ काफी बड़े अवसाद हैं जो हमेशा पानी को बनाए रखते हैं। कई टैंक हैं, जिनमें से कुछ काफी आकार के हैं, जैसे कि लहसिल बबेरू के खार में और तहसील कर्वी के मानिकपुर में। हालांकि, इनमें से अधिकांश की खुदाई पानी के भंडारण के लिए की गई है, कई अकाल राहत कार्यों के रूप में। सिमू बबेरू में एक बड़ा अवसाद है, जो स्वाभाविक रूप से उचित सीमा की झील है, लेकिन यह गहरी नहीं है और नवंबर और दिसम्बर में किसानों द्वारा पानी को बहा दिया जाता है।

भारी वर्षा के मौसम में, विशेष रूप से जब बारिश देर तक जारी रहती है, तो मार और हबर मिट्टी– नमी के अपने प्रतिधारण के कारण पानी से ढकी होती है और कुछ हिस्सों में एक झील की उपस्थिति होती है, यहां तक कि बतख और स्नाइप की सन्गत के साथ भी।

केन नदी की अन्य जानकारी

पथरीली घाटियों से बहने वाली नवें यमुना नदी और केन के सन्गम से बहने वाली नदियों में बाँदा तक ही आती–जाती हैं। केन नदी पर बायें तरफ बाँदा कैनाल है। ग्रीष्म ऋतु में नहर का जलसन्चार बढ़ाने के लिए गांगउ के पास बायें तरफ बांध है। यह नदी एकमात्र वर्षा ऋतु में ही जलमग्न रहता है। गर्मी के मौसम में नदी लगभग सूखी हो जाती है। केन और मंदाकिनी यमुना की अंतिम उपनदियाँ हैं, क्योंकि इसके बाद यमुना गन्गा निकलती है। केन नदी जबलपुर, मध्य प्रदेश से प्रारंभ होती है, पन्ना में इससे कई धाराएँ और जुड़ती हैं फिर बाँदा, उत्तर प्रदेश में ~~मैसूर~~ से सन्गम होता है। यह नदी का शजर पत्थर प्रसिद्ध है।

रुचि /पर्यटन के स्थान

केन नदी पर केन घड़ियाल अभयारण्य पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र हैं। यहाँ बनी चट्टानें अलग–अलग रंग दिखाती हैं और ग्रेनाइट, डोलोमाइट और क्वाट्र्ज से बनी हैं।

गन्गऊ बाँध का निर्माण केन और सिमरी नदियों के सन्गम पर किया गया है। केन नदी पन्ना राष्ट्रीय उद्यान से होकर गुजरती है।

केन नदी के किनारे कई महल हैं जिनका इस्तेमाल इस क्षेत्र के राजपूतों ने मुगलों के खिलाफ लड़ने के लिए किया था। आजकल, इनमें से कुछ महलों पर डकैतों का कब्जा है और ये स्थानीय पुलिस के लिए चिन्ता का विषय हैं। ये महल इतने खंडहर हो चुके हैं कि जिस पहाड़ी पर ये बने हैं, उसके नीचे से दीवारें देखना मुश्किल है और केवल प्रमुख इमारतों के खंडहर ही बचे हैं। इनमें से कुछ महल ट्रेकिंग के लिए अच्छे हैं।

यह अपने दुर्लभ सजर या डेंड्रिटिक एगेट पत्थर के लिए प्रसिद्ध है।

बान्दा शहर केन नदी के तट पर स्थित है।

धसान नदी मध्य भारत में बहने वाली बेतवा की सहायक नदी है जो इससे दायें से आकार जुड़ती है। यह नदी मध्य प्रदेश के रायसेन ज़िले से निकलती है और उत्तर प्रदेश के ललितपुर जिले के साथ मध्य प्रदेश की सीमा का निर्धारण करती है।

रानेह फॉल्स, केन घरियाल अभयारण्य, गन्गऊ बांध, पन्ना राष्ट्रीय उद्यान, खजुराहो, कालिंजर किला, महोबा, झांसी।

नदी में पांडवा घाट और कोराई, शबरी जलप्रपात तुलसी झरना जलप्रपात और भी हैं।

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

जलप्रपात

रानेह जलप्रपात

भारतीय राज्य मध्य प्रदेश के खजुराहो में स्थित केन नदी पर एक प्राकृतिक झरना है। केन नदी गुलाबी और लाल से लेकर भूरे रंग के रंगों के अलग–अलग रंगों में शुद्ध क्रिस्टलीय ग्रेनाइट से बनी 3 किलोमीटर लंबी और 30 मीटर(98 फीट) गहरी घाटी बनाती है। घाटी में झरनों की एक श्रृंखला है। बड़े और छोटे झरने साल भर चलते हैं। अन्य मौसमी पतझड़ मानसून के दौरान दिखाई देते हैं। यह खजुराहो से लगभग 20 किलोमीटर दूर है। केन घड़ियाल अभयारण्य रेनेह जलप्रपात से नीचे केन और खुदर नदियों के सन्गम पर स्थित है। यहां केन नदी ग्रेनाइट और डोलोमाइट से समृद्ध आग्नेय चट्टानों की एक सन्कीर्ण घाटी से होकर गुजरती है। पन्ना राष्ट्रीय उद्यान में पांडव जलप्रपात भी पास में स्थित है।

शबरी जलप्रपात तुलसी झरना

तुलसी झरना, जिसे शबरी झरना के नाम से भी जाना जाता है, उत्तर प्रदेश के चित्रकूट जिले में स्थित है, विशेष रूप से दुदैला गाँव(बम्बिया और टिकरिया ग्राम पंचायतों के पास)। यह मारकुंडी से 10 किलोमीटर, मझगांव(एमपी) से 13 किलोमीटर, मानिकपुर से 32 किलोमीटर और चित्रकूट धाम से 47 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। पौराणिक कथाओं के अनुसार, भगवान राम ने शबरी मां द्वारा चढ़ाए गए फलों को खाने के बाद इस स्थान पर स्नान किया था और इस स्थान का नाम उनके नाम पर रखा गया था। शबरी झरने की यात्रा करने का सबसे अच्छा समय मानसून के दौरान होता है जब पानी का प्रवाह प्रचुर मात्रा में होता है। जुलाई से सितंबर इस जगह का पता लगाने के लिए आदर्श महीने हैं, हालांकि कुछ लोग दिसम्बर तक भी यहां जाते हैं।

चित्रकूट जिले के मशहूर शबरी जलप्रपात का नाम बदलकर अब 'तुलसी जलप्रपात' रख दिया गया। इसका विरोध स्थानीय कोल आदिवासी लोगों द्वारा किया जा रहा है। स्थानीय लोगों के अनुसार, शबरी नाम की महिला जिसके नाम पर झरने का नाम है, वह उनके ही समुदाय से थी। ऐसे में झरने का नाम बदलने का अर्थ है उनके समुदाय के इतिहास को धूमिल कर देना।

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

Minerals
खनिज

शजर बान्दा जिले की पहचान है। सन्दर्भ–2.02, उद्योग

शजर की खोज करीब 400 साल पहले बान्दा में हुई थी। इसे खोजने वाला एक अरब था। वह इसके रंग–बिरंगे पैटर्न से मंत्रमुग्ध हो गया जो पत्तियों और पेड़ों की तरह दिखते हैं और इसलिए उसने इसका नाम सज़र रखा(अरबी में इसका मतलब पेड़ होता है)। क्षेत्रीय स्पर्श के कारण, सज़र शजर बन गया। इसे उर्दू में हकीक(अकीक/हकीक/अकीक) और हिंदी में स्फटिक कहा जाता है।

अंग्रेजी में शजर को डेंड्राइट एगेट के नाम से जाना जाता है। यह एक समान पत्थर है और अलग–अलग रंगों और पैटर्न में पाया जाता है।

डेंड्राइट ऑगेट(एगेट) शजर है और इसे ट्री ऑगेट(एगेट) और फंगस ऑगेट के नाम से भी जाना जाता है। यह विशेष रूप से बान्दा की केन नदी में पाया जाता है। पत्थर की विशेषता पत्तियों, पेड़ों, पहाड़ों, जानवरों, प्रतीकों आदि के रंगीन पैटर्न हैं। शजर के बारे में एक स्थानीय मिथक है। ऐसा माना जाता है कि पत्थर अपने सामने पड़ी किसी भी वस्तु की छाप लंबे समय तक छोड़ देता है। पर यह सच नहीं है। शजर पत्थर पर छवियों के निर्माण के पीछे एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है। दरअसल, शजर पर जो पैटर्न हम देखते हैं, वह कुछ और नहीं बल्कि कवक(मूल रूप से शैवाल) के फंसे हुए जीवाश्म हैं। एक कवक, जो शजर पत्थर के दो या अधिक टुकड़ों के बीच फंस जाता है, या तो एसिड या बेस पैदा करता है। यह एसिड/बेस पत्थरों को पारभासी बनाता है और एक अकार्बनिक गोंद के रूप में कार्य करता है

अपनी विशिष्टता और धार्मिक सम्बन्धों के कारण, यह पत्थर आज भी विदेशों में निर्यात किया जाता है। शजर पत्थरों का एक बहुत छोटा उद्योग स्थानीय और अंतर्राष्ट्रीय बाजार की मांग को पूरा करता है। लेकिन पत्थर अभी भी मध्य–पूर्व में लोकप्रिय है और अगर इसे ठीक से बढ़ावा दिया जाए तो यह निर्यात कार्यक्रम की शत–प्रतिशत सफलता सुनिश्चित करता है।

निर्यातकों के अनुसार, दुनिया भर से हज यात्री सऊदी अरब में कुरान की आयतों के साथ शजर पत्थर की स्मृति चिन्ह ले जाते हैं। विडंबना यह है कि एजेंटों के माध्यम से बान्दा से निर्यात किया जाता है

महिमा और सुंदरता के इस पत्थर को इसकी उचित प्रशंसा और प्रसिद्धि मिलनी चाहिए। उद्योग को कुछ बड़ा बढ़ावा देने की आवश्यकता है, लेकिन सरकार की मदद के बिना यह लगभग असम्भव लगता है।

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

सन्दर्भ / सौजन्यः

ीजजचरूध्ध्मदण्ूपापचमकपंण्वतहध्ूपापध्ङ्ममदत्रृत्पअम
थ्नसस जमगज व ित्रृळंमजजममत व ि्पदकपं न्जजंत च्तंकमीए क्पेजतपबज ठंदकंत्रृ
ळंमजजममत व ि्पदकपं न्जजंत च्तंकमीए क्पेजतपबज ठंदकंत्रृ ठन्छक्म्. च्हम26चक ि्8 व ि्इववा
ीजजचेरूध्ध्तबीपअमण्वतहध्ेजतमंउध्कसपण्बेसण्2889ध्2889त्रृकरअनण्जगज   च्हम7.12
त्पअमत ैलेजमउ ।दपझ ॅजमत त्मेवनतबमे
ठनदकमसींदक ज्ञप बीपजतांसं.1.197